वी.यू. द्वारा पेंगोलिन संरक्षण एवं जागरूकता अभियान का शुभारंभ

पेंगोलिन भी किसानों का मित्र– डॉ. जुयाल

स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हेल्थ, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा वन विभाग मध्यप्रदेश शासन के साथ मिलकर पेंगोलिन संरक्षण एवं जागरूकता अभियान आज दिनांक 06.02.2019 को आयोजित किया जा रहा है। इस असवसर पर माननीय कुलपति ने कहा कि पेंगोलिन किसानों का मित्र है। यदि यह प्रजाति विलुप्त होती है या इसकी संख्या में कमी आती है तो कीड़ों की संख्या नियंत्रण करने हेतु हमें कीनाशकों का उपयोग करना होगा जो कि पशु स्वास्थ्य, मनुष्य स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिये हानिकारक है। पेंगोलिन एक छोटे आकार का स्तनधारी वन्यप्राणी है जो बहुत शर्मिला एवं संवेदनशील होता है। इसका शरीर केरेटिन से बने स्केल से ढका होता है। पेंगोलिन की जीभ बहुत लम्बी और चिपचिपी होती है जिसकी मदद से यह कीड़े खाता है। एक अध्ययन के मुताबिक यह साल भर में 7 करोड़ कीड़े तक खा सकता है अतः यह कीड़े की संख्या को प्राकृतिक रूप से नियंत्रण रखने के लिये एक महत्वपूर्ण जीव है। अतः पेंगोलिन अप्रत्यक्ष रूप से किसानों का मित्र कहा जा सकता है जो कि दीमक इत्यादि कीड़ों को खाकर कृषि में लाभ पहुचाता है। इसके आकार की डायनासौर से सामानता के कारण उसे लोग डायनायौर का बच्चा कहते है एवं इसे मारने की कोशिश करने है। इसके आखेट का एक प्रमुख कारण यह है कि इसके शाररिक अंग पारंपरिक चाइनीज मेडीसिन में बहुत उपयोगी है एवं इसके विभिन्न अंग वियतनाम, चायना आदि में अवैध रूप से बेचे जाते है। एक अध्ययन के मुताबिक प्रति पाँच मिनिट में एक पैंगोलिन का शिकार देश भर में हो रहा है। प्रतिवर्ष यह संख्या एक लाख है। अतः भारतीय पेगोलिन

अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में बढती मांग के कारण अपना अस्तित्व बचाने के लिये संघर्ष कर रही है। जैवविविधिता के प्राकृतिक संतुलन हेतु इसे बचाना अति आवश्यक है। इसी कड़ी में आज पेंगोलिन संरक्षण एवं जागरूकता अभियान मध्यप्रदेश शासन के साथ मिलकर शुरू किया गया है जो कि पूरे विश्व में भी मनाया जा रहा है।

संचालक वाइल्ड लाइफ डॉ. बी.सी. सरखेल ने कहा कि यहाँ यह बताना उचित होगा कि इस विश्वविद्यालय का स्कूल ऑफ वाईल्ड लाईफ फॉरेंसिक एण्ड हेल्थ भी इनके संरक्षण में योगदान दे रहा है। एवं विगत वर्षो में 25 से अधिक पैंगोलिन के फॉरेन्सिक सेम्पल एवं पोस्ट–मॉर्टम रिर्पोट वन विभाग को प्रदान की जा चुकी है।

इस अवसर पर डॉ. बी.सी. सरखेल, डॉ. वाय.पी. साहनी, डॉ. एस.एन. परमार, डॉ. जे.के. भारद्वाज, डॉ. एस.के. जोशी, डॉ. व्ही.के. भट्ट, डॉ. ओ.पी. श्रीवास्तव, डॉ. सुनील नायक सहित समस्त प्राध्यापकों को उपस्थित उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निधि राजपूत तथा आभार प्रदर्शन डॉ. के.पी. सिंह ने किया। कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका डॉ. काजल कुमार जाधव, डॉ. अमोल रोकड़े सहित स्कूल के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर